Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.27
https://www.srjis.com/issues_data/220
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL
AUG-SEPT 2023, Vol-11/59
https://doi.org/10.5281/zenodo.8420433

महात्मा गाँधी और सत्याग्रह: समकालीन प्रासंगिकता

डॉ पवन कुमार,
सहायक आचार्य राजनीति शास्त्र, पंडित संतराम राजकीय महाविद्यालय वैजनाथ,
जिला कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

Paper Received On: 25 August 2023
Peer Reviewed On: 27 September 2023
Published On: 01 October 2023

सारांश

महात्मा गाँधी आधुनिक भारत के एक महान राष्ट्रीय नेता और समाज सुधारक थे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का एक युग गाँधी युग के नाम से जाना जाता है। गाँधी जी की सत्य और अहिंसा में दृढ़ आस्था थी और अपने इन्ही विश्वासों के आधार पर उन्होंने बुराई के प्रतिरोध के एक नवीन मार्ग का अन्वेषण किया, जिसे सत्याग्रह का नाम दिया गया। गाँधी जी ने अपने राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में सत्याग्रह के महत्व को देखा तथा इसको न केवल राजनीतिक समस्याओं के लिए बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के लिए भी एक प्रभावशाली शास्त्र सिद्ध किया। गांधीजी के द्वारा न केवल आन्तरिक क्षेत्र में वरन् विदेशी आक्रमण की स्थिति में भी सत्याग्रह का सुझाव दिया गया है। उनका विश्वास था कि एक सत्याग्रही अपने विरोधी से आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित कर लेता है वह उसमें ऐसा विश्वास उत्पन्न कर देता है कि वह बिना अपने को नुकसान पहुचाएं उनको नुकसान नही पहुंचा सकता। सत्याग्रह तो सत्य की विजय हेतु किए जाने वाले आध्यात्मिक और नैतिक संघर्ष का नाम है। प्रस्तुत शोध पत्र में महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत विचार सत्याग्रह तथा इसकी समकालीन प्रासंगिकता का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीय स्रोतों पर आधारित है जिसमें महात्मा गाँधी द्वारा रचित रचनाओं, भाषणों तथा विभिन्न विद्वानों द्वारा महात्मा गांधी पर रचित साहित्य एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित तथ्यों का संकलन किया गया है।

मुख्य शब्द: *सत्याग्रह, अहिंसा, असहयोग, निष्क्रिय प्रतिरोध*

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रस्तावना: सत्य और अहिंसा का अटूट संबंध ही सत्याग्रह के विचार को जन्म देता है। सत्याग्रह दो शब्दों से मिलकर बना है सत्य + आग्रह जिसका अभिप्राय है सत्य के प्रति आग्रह अर्थात आत्म शक्ति, प्रेम भक्ति और सत्य शक्ति का आग्रह। गाँधी जी ने सत्याग्रह के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि सत्याग्रह का मूल अर्थ है - सत्य बल का अवलम्बन , सत्य की अथक खोज और उसे तक पहुंचने का दृढ़ संकल्प । सत्याग्रह विनम्रता, असीम धैर्य तथा प्रदीप्त आस्था है यह अपना पुरस्कार स्वयं है। गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सभी प्रकार की हिंसा वर्जित है; इसमें मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का कोई स्थान नहीं है तथा विरोधी को हानि पहुंचाने के विचार से उसके प्रति द्वेष भाव रखना या उससे अथवा उसके बारे में कठोर वचन बोलना सत्याग्रह को तोड़ना है। गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह एक सकारात्मक तथा विधेयात्मक अवधारणा अवधारणा है। सत्याग्रह में शालीनता है, यह जीने और मरने दोनों की कला सिखाता है।

सत्याग्रह के स्रोत: गाँधी जी अपने जीवन के प्रारंभ से ही सत्य एवं हिंसा के पुजारी थे। उन्होंने भारतीय वेद ,पुराण उपनिषद ,रामायण एवं गीता का गहन अध्ययन किया था और सत्याग्रह का सिद्धांत इन ग्रंथो के मूल पर आधारित था।उन्होंने महावीर स्वामी तथा महात्मा बुद्ध के उपदेशों से यह शिक्षा ग्रहण की की बुराई को भलाई से ही जीता जा सकता है ।जैन धर्म से गांधी जी ने सत्य अहिंसा ,त्याग एवं पवित्रता की शिक्षा ग्रहण की। गाँधी जी पर फिरोजशाह मेहता एवं गोपाल कृष्ण गोखले जैसे उदारवादी चिंतकों का प्रभाव रहा तथा तिलक द्वारा अपनाए गए स्वदेशी बहिष्कार राष्ट्रीय शिक्षा एवं निष्क्रिय प्रतिरोध के साधनों से भी वह अत्यधिक प्रभावित थे। गांधी जी के मन में सत्याग्रह का विचार उस समय आया जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे भीषण अत्याचारों को देखा और उन्होंने उन्हें मुक्ति दिलाने का विचार किया। हेनरी डेविड थोरो के प्रसिद्ध निबंध सविनय अवज्ञा ने उनके सत्याग्रह की अवधारणा को एक वैज्ञानिक विश्लेषण प्रदान किया।

सत्याग्रही के गुण: गाँधी जी ने सत्याग्रह के लिए नैतिक अनुशासन के कठोर नियम निर्धारित किया उनका विश्वास था कि आत्म बल से ही व्यक्ति बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकता है किंतु उनका मानना था कि सत्याग्रही में आत्म बल तभी आ सकता है यदि वह अपने में कुछ आवश्यक गुण धारण करें। गांधी जी ने प्रसिद्ध रचना हिंद स्वराज में सत्याग्रही के गुणों - ब्रह्मचारी, निर्भयता ,निर्धनता ,सत्य ,निष्ठा एवं अहिंसा में विश्वास का वर्णन किया है। इन गुणों से संपन्न सत्याग्रही ही क्रोध पर प्रेम से असत्य पर सत्य से और बुराई पर भलाई से विजय प्राप्त कर सकता है।

सत्याग्रही की योग्यताएं: गाँधी जी का सत्याग्रह दर्शन सत्य के सर्वोच्च आदर्श पर आधारित है इसीलिए गांधी जी ने सत्याग्रही के लिए कुछ योग्यताएं भी निर्धारित की है। गांधी जी के अनुसार

प्रत्येक सत्याग्रही में ईश्वर पर पूर्ण आस्था होनी चाहिए तथा उसे सत्य और अहिंसा को अपना धर्म मानते हुए उनमें विश्वास करना चाहिए। सत्याग्रह को आदतन खड़ी धारण करने वाला तथा चरखा काटने वाला होना चाहिए। इसके अलावा वह शराब और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से मुक्त होना चाहिए। गांधीजी के शब्दो में, "अपने विरोधियों को दुःखी बनाने के बजाय, स्वयं अपने पर दुःख डालकर सत्य की विजय प्राप्त करना ही सत्याग्रह है।" सत्याग्रही समय-समय पर निर्धारित अनुशासन के नियमों का स्वेच्छा से पालन करें।

सत्याग्रही के गुण: गाँधी जी ने सत्याग्रह के लिए नैतिक अनुशासन के कठोर नियम निर्धारित किया उनका विश्वास था कि आत्म बल से ही व्यक्ति बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकता है किंतु उनका मानना था कि सत्याग्रही में आत्म बल तभी आ सकता है यदि वह अपने में कुछ आवश्यक गुण धारण करें। गाँधी जी ने 'हिन्द स्वराज्य' में सत्याग्रही के गुणों - ब्रह्मचारी, निर्भयता ,निर्धनता ,सत्य ,निष्ठा एवं अहिंसा में विश्वास का वर्णन किया है। इन गुणों से संपन्न सत्याग्रही ही क्रोध पर प्रेम से असत्य पर सत्य से और बुराई पर भलाई से विजय प्राप्त कर सकता है। सत्याग्रही कभी अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छल, कपट, झूठ, हिंसा, इत्यादि का आश्रय नही लेता। वह जो कुछ करता है खुले रूप में करता है और अपनी कमजोरियों व भूलों को छिपाने के बजाय उहें खुले रूप में स्वीकार करने के लिए तत्पर रहता है। गाँधी जी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सत्याग्रह के सिद्धान्त पर आचरण नही कर सकता ।

सत्याग्रह के विभिन्न रूप: गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह का यह शस्त्र विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग रूप ग्रहण कर सकता है। सत्याग्रह के प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं ;

(1) निष्क्रिय प्रतिरोध: निष्क्रिय प्रतिरोध सत्याग्रह का प्रारंभिक रूप है यह निर्बल व्यक्ति का का अस्त्र है और हिंसा से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं है गांधी जी ने निष्क्रिय प्रतिरोध का सर्वप्रथम प्रयोग दक्षिण अफ्रीका में वहां कि ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अन्यायों के विरुद्ध किया।

यद्यपि अधिकतर लोग सत्याग्रह का अर्थ निष्क्रिय प्रतिरोध से लगते हैं परंतु इन दोनों में विशेष अंतर है जिनका उल्लेख निम्न रूपों में किया जा सकता है;

(1) निष्क्रिय प्रतिरोध शारीरिक शक्ति पर आधारित होने के कारण निर्बल अस्त्र है जबकि सत्याग्रह विशुद्ध रूप से आत्मा की शक्ति की सर्वोच्चता पर आधारित सशक्त व्यक्तियों का अस्त्र है।

(2) निष्क्रिय प्रतिरोध में व्यक्ति अपने विरोधी को परेशान करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है इसके विपरीत सत्याग्रह में सत्याग्रही स्वयं ही अधिकतम कष्ट सहन करके प्रेम द्वारा अपने विरोधी के हृदय में परिवर्तन करता है ।

(3) निष्क्रिय प्रतिरोध में व्यक्ति अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिंसा का प्रयोग करता है इसके विपरीत सत्याग्रह में व्यक्ति किसी भी अवस्था में अहिंसा का परित्याग नहीं करता है।

(4) निष्क्रिय प्रतिरोध में विरोधी के प्रति द्वेष घृणा एवं विश्वास की भावनाएं होती है जबकि सत्याग्रह में विरोधी के प्रति इन हीन भावनाओं का पूर्ण अभाव होता है।

(5) निष्क्रिय प्रतिरोध में व्यक्ति में आंतरिक शुद्धता का अभाव होता है जबकि सत्याग्रह नैतिक शक्ति एवं आत्मिक शक्ति की श्रेष्ठ पर आधारित है।

(6) निष्क्रिय प्रतिरोध में कृत्रिमता रहती है और इसका प्रयोग केवल सीमित क्षेत्र में ही किया जा सकता है जबकि सत्याग्रह में कृत्रिमता का कोई स्थान नहीं होता और इसका क्षेत्र सार्वभौमिक है।

(2) असहयोग: सत्याग्रह का एक महत्वपूर्ण अंग अहिंसात्मक असहयोग है। असहयोग, सत्याग्रह का एक प्रबल अस्त्र है। इसका अभिप्राय यह है कि अत्याचारी व्यक्ति को अपनी गलतियों का अहसास करा कर उसे सहयोग प्राप्त करने के लिए मजबूर करना। गांधीजी का विचार था कि असहयोग पूर्ण रूप से अहिंसात्मक होना चाहिए क्योंकि हिंसात्मक सहयोग बुराई को कम करने के बजाय इसे और बढ़ाता है । गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के के इस रूप का सर्वप्रथम प्रयोग किया। इसके अलावा उन्होंने सन् 1919-20 में भारत में ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए असहयोग आन्दोलन के मार्ग को ही अपनाया था।

(3) सविनय अवज्ञा आन्दोलन: सविनय अवज्ञा का तात्पर्य अहिंसक और विनयपूर्ण तरीके से कानून की अवज्ञा करना है चाहे उसके लिए सत्याग्रही को कितना ही कठोर दंड क्यों ना भोगना पड़े। कानून की यह अवज्ञा हिंसक रूप ग्रहण न कर ले, इसलिए उनका विचार था कि सविनय अवज्ञा का प्रयोग जनसाधारण द्वारा नहीं वरन कुछ विशेष व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए और किन कानूनों का उत्लंघन किया जाये, यह बात सत्याग्रहियों द्वारा नहीं,वरन नेता द्वारा ही निश्चित की जानी चाहिए। सन् 1930 में गाँधी जी द्वारा पूर्ण स्वराज की प्राप्ति के लिए नमक कानून और अन्य कानून को तोड़ने के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया था।

(4) हिजरत या प्रवजन: सत्याग्रह का एक अन्य रूप हिजरत है, जिसका अर्थ है, स्वेच्छा से स्थाई निवास स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान में जाकर बस जाना। गाँधी जी हजरत का परामर्श उन व्यक्तियों को देते थे जिनमें ना तो अहिंसा की सच्ची शक्ति होती थी और ना जिनमें हिंसा द्वारा अपनी रक्षा करने का बल होता था परंतु जो अनुकूल परिस्थितियों में हिंसक बना सकते थे। सन् 1930 में बारडोली, बोरसाद एवं जमशेद की जनता को गाँधी जी के द्वारा हिजरत का सुझाव दिया गया।

(5) बहिष्कार: बहिष्कार भी सत्याग्रह का का एक महत्वपूर्ण रूप है । यह तीन प्रकार का हो सकता है- सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक। सामाजिक बहिष्कार,अहिंसात्मक तथा हिंसात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है। गाँधी जी इस हथियार को सीमित रूप में प्रयुक्त करना चाहतेथे। वे कहते हैं

कि इस अस्त्र का प्रयोग उन लोगों के विरुद्ध करना चाहिए जो जनमत की अवहेलना करते हैं जबकि गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में आर्थिक और राजनीतिक बहिष्कार का विशेष रूप से प्रयोग किया था आर्थिक बहिष्कार के अंतर्गत उन्होंने विदेशी वस्तुओं के प्रयोग न करने और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को पर प्रोत्साहन देने पर बोल दिया था। राजनीतिक बहिष्कार में ब्रिटिश सरकार द्वारा दी जाने वाली उपाधियां को लौटाना तथा पदों का परित्याग करना ब्रिटिश सरकार द्वारा अपने स्वार्थी हितों के लिए स्थापित की गई संस्थाओं से संबंध विच्छेद करना था।

(5) धरना: सत्यागह का अन्य रूप धरना है जिसका आजकल बडा गलत प्रयोग किया जाने लगा है। गाँधी जी इसे अत्यधिक उग्र अस्त्र समझते थे और उनका विचार था कि इसे अपनाने में अत्यधिक सावधानी बरती जानी चाहिए। धरना केवल कुछ विशेष अवसरों पर आत्मशुद्धि या अत्याचारियों के हृदय-परिवर्तन के लिए ही किया जाना चाहिए। गाँधी जी ने अपने अहिंसात्मक आंदोलन में शराब तथा अफीम के विरुद्ध और विदेशी वस्तुओं और वस्त्रों के विरुद्ध धरने की अपील की थी ।

(6) हड़ताल: सत्याग्रह का एक अन्य रूप हड़ताल है, इसका अर्थ है किसी अन्य या शिकायत के विरुद्ध या व्यापार के विरोध में संतोष प्रकट करते हुए काम पर न जाना। इस हथियार से जनता आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित होती है परंतु इस हथियार का प्रयोग कभी-कभी ही करना चाहिए क्योंकि इसका बार-बार प्रयोग प्रभावहीन बना देता है। गाँधी जी की हड़ताल संबंधी धारणा श्रमसंघवादियों की धारणा से बिल्कुल विपरीत थी उनका विचार था कि हड़ताल शांतिपूर्ण एवं अहिंसात्मक ढंग से की जानी चाहिए तथा इसमें उन्हीं व्यक्तियों को शामिल किया जाना चाहिए जो किसी कष्ट या शिकायत का निवारण चाहते हैं। जिन व्यक्तियों का इससे कोई संबंध नहीं है उनको हड़ताल में शामिल होने के लिए विवश नहीं किया जाना चाहिए

(7) उपवास: उपवास सत्याग्रह का एक अत्यंत शक्तिशाली अस्त्र है। गाँधी जी ने इसका प्रयोग अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए किया था परंतु बाद में उन्होंने इसका सार्वजनिक शुद्धि और ब्रिटिश सरकार द्वारा किए जाने वाले अन्यायों एवं अत्याचारों का विरोध करने के लिए किया था। उनका कहना था कि उपवास करने वाले व्यक्ति का उद्देश्य अपने विरोधी पर किसी तरह का दबाव डालना नहीं होना चाहिए बल्कि उसके हृदय में सद्भावना का विकास करना मस्तिष्क में सद्विचार उत्पन्न करना और उसे सत्य एवं न्याय के पथ पर लाना होना चाहिए। उन्होंने उपवास के सीमित प्रयोग पर बल दिया था क्योंकि उपवास केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें श्रेष्ठ नैतिक, मानसिक एवं आध्यात्म बल के अतिरिक्त धैर्य, अहिंसा, आत्म संयम एवं ईश्वर में विश्वास हो।

सत्याग्रह का मूल्यांकन: गाँधी जी का सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का कभी ना भुलाया जाने वाला ऐसा ऐतिहासिक अध्याय है जो अन्याय, हिंसा, औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध आवाज

उठाने वाले लोगों को सतत संघर्ष की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्होंने सत्याग्रह के साधनों द्वारा समाज के सभी वर्गों को एकता के सूत्र में बांध और विश्व इतिहास के सबसे सफल अहिंसक आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया। वर्तमान विश्व में, जब अधिकांश देश आतंकवाद,गरीबी,असमानता, जातीय व धार्मिक संघर्ष, असहिष्णुता आदि अनेक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य संकटों से जूझ रहे हैं,ऐसे में मन में यह प्रश्न आना स्वाभाविक है कि क्या गाँधी जी का दिखाया रास्ता प्रासंगिक हो सकता है और इस तरह की समस्याओं से निपटने के लिए उनकी अहिंसा और सत्याग्रह को लागू किया जा सकता है। इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही सकारात्मक भावना से दिया जा सकता है। भारत में अन्ना हजारे द्वारा चलाया गया गाँधीवादी सत्याग्रह आंदोलन ने यह सिद्ध कर दिया है कि आज भी गाँधी के आदर्शों की जड़े काफी गहरी है। यद्यपि गाँधी जी द्वारा विदेशी आक्रमण की स्थिति में भी सत्याग्रह का सुझाव वर्तमान वैश्विक स्थिति को थोडी शंका उत्पन्न करता है क्योंकि आज कोई भी राष्ट्र निशस्त्रीकरण की नीति अपनाकर तथा पूर्ण रूप से अहिंसक साधनों पर निर्भर रहकर अपने नागरिकों की स्वतन्त्रता और सुरक्षा खतरे में नहीं डाल सकता लेकिन हमें यह भी बात स्मरण रखनी होगी कि सत्य,अहिंसा मानव समाज के आदर्श रहे है उनके विचारों को आज विश्व अपना आदर्श मानता है इसीलिए उनकी जयंती को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है अभी हाल ही में महात्मा गाँधी की वैश्विक स्वीकार्यता एक बार फिर पूरे विश्व को देखने को मिली जब देश की राजधानी दिल्ली में संपन्न हुए जी-२० देशों के शिखर सम्मेलन में विभिन्न देशों से आए राष्ट्राध्यक्षों, सरकार के प्रमुखों और अंतराष्ट्रीय संगठनों के प्रमुख महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के लिए उनकी समाधि स्थल राजघाट गए इन सब उदाहरणों से महात्मा गाँधी द्वारा कह गए शब्द वास्तव में सत्य सिद्ध सिद्ध होते है कि गाँधी मर सकता है मगर गाँधी वाद नहीं।

निष्कर्ष: उपर्युक्त विचार-मन्थन के आधार पर कहा जा सकता है महात्मा गांधी जी ने मानव समाज के लिए महान आदर्श स्थापित किये है जो विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते है। महात्मा गाँधी दुनिया के इतिहास में सत्याग्रह के पैगंबर के रूप में प्रसिद्ध हैं। सत्याग्रह की प्रासंगिकता-अप्रासंगिकता इस बात पर निर्भर करती है कि उसका प्रयोग किस प्रकार के व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। हमें यहां स्मरण रखना चाहिए कि देश-काल-परिस्थिति के अनुसार समस्याएँ और उनको सुलझाने का तरीका बदलता रहता है। गाँधी जी ने सत्याग्रह का सफल प्रयोग कर पूरी दुनिया को अन्याय के खिलाफ अहिंसक तरीके से संघर्ष करने का रास्ता बताया है। उनकी यह देन दुनिया के लिए वर्तमान ही नहीं भविष्य में भी प्रासंगिक रहेगी। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी के विचारों को आवरण के रूप में नहीं बल्कि अंतर्मन से आत्मसात करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

गाँधी ,एम.के. (1928),सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका,अहमदाबाद : नवजीवन पब्लिशिंग हाउस.

पारेख, भीखू. (1995),गांधीज पॉलीटिकल फिलासफी -अ क्रिटिकल एग्जामिनेशन, दिल्ली: अजंता पब्लिकेशंस

प्रभु, आर.के, यू .आर राव. (2003), महात्मा गांधी के विचार.नई दिल्ली:नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया.

गाँधी, मोहनदास करमचंद.(2008), सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा (अनुवादक महावीर प्रसाद पोद्दार) नई दिल्ली:साहित्य मंडल प्रकाशन.

वर्मा,डॉ.वी पी.(2008), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन,आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा.

अवस्थी, डॉ.ए.पी. (2008), भारतीय राजनीतिक विचारक आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल .

यंग इंडिया, 2 अगस्त 1919. हरिजन 27 अगस्त 1938.

सान्याल, शंकर कुमार."आज भी प्रासंगिक है गांधी." अमर उजाला दैनिक समाचार पत्र, 2 अक्तूबर 2023.

मिश्रा,गिरीश्वर ."गाँधी जी में अपनी छवि देखता समाज" दैनिक जागरण समाचार पत्र , 2 अक्तूबर 2023,.

जाफरी, तनवीर "रहती दुनिया तक प्रसांगिक रहेगा गांधी दर्शन." हिमाचल दस्तक दैनिक समाचार पत्र, अंक 2 अक्तूबर 2023.

Cite Your Article:

डॉ पवन कुमार. (2023). महात्मा गाँधी और सत्याग्रह: समकालीन प्रासांगगकता. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, 11(59), 51–57. https://doi.org/10.5281/zenodo.8420433